سُورَةُ الأَحْقَافِ

सूरतुल अहक़ाफ़-४६

सूर: अहक़ाफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इस में पैंतीस आयतें और चार रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

حمٓ ﴿١﴾

१. हा॰मीम॰ ।[1]

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾

२. इस किताब का नाज़िल करना अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाले की तरफ़ से है।

مَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُسَمًّى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنْذِرُوا مُعْرِضُونَ ﴿٣﴾

३. हम ने आकाशों और धरती और उन दोनों के बीच की सारी चीज़ों को बेहतरीन तदबीर के साथ ही एक निर्धारित (मुक़र्रर) समय के लिए बनाया है, और काफ़िर लोग जिस चीज़ से डराये जाते हैं मुंह मोड़ लेते हैं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ ۖ ائْتُونِي بِكِتَابٍ مِنْ قَبْلِ هَٰذَا أَوْ أَثَارَةٍ مِنْ عِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤﴾

४. (आप) कह दीजिए कि भला देखो तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो, मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा हिस्सा बनाया है या आकाशों में कौन-सा उनका हिस्सा है? अगर तुम सच्चे हो तो इस से पहले ही की कोई किताब या कोई ज्ञान (इल्म) ही जो उद्धृत (नक़ल) किया जाता हो, मेरे पास लाओ।

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ﴿٥﴾

५. और उस से बढ़कर ज़्यादा गुमराह दूसरा कौन होगा जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है, जो क़यामत तक उसकी दुआ न क़ुबूल कर सकें बल्कि उन के पुकारने से केवल ग़ाफ़िल हों।[2]

---

[1] यह सूरह के शुरूआती अक्षर (हुरूफ़) उन मुतशाबिहात (अनुरूपों) में से हैं जिनका ज्ञान (इल्म) सिर्फ़ अल्लाह को है इसलिए उन के मायने और मतलब में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

[2] यानी यही सब से बड़े गुमराह हैं जो पत्थर की मूर्तियों या मुर्दा इंसानों को मदद के लिए पुकारते हैं, जो क़यामत तक जवाब देने में मजबूर हैं और मजबूर ही नहीं बल्कि पूरी तरह से बेख़बर हैं।

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ⑥

६. और जब लोगों को जमा किया जायेगा तो ये उनके दुश्मन हो जायेंगे और उनकी इबादत से साफ इंकार कर देंगे ।[1]

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ⑦

७. और उन्हें जब हमारी स्पष्ट (वाज़ेह) आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो काफ़िर लोग सच्च बात[2] को जब कि उन के पास आ चुकी, कह देते हैं कि यह तो खुला जादू है ।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑧

८. क्या वे कहते हैं कि उसे तो उस ने ख़ुद बना लिया है । (आप) कह दीजिए कि अगर मैं ही उसे बना लाया हूँ तो तुम मेरे लिए अल्लाह की तरफ़ से किसी चीज़ का हक़ नहीं रखते । तुम इस क़ुरआन के बारे में जो कुछ कह सुन रहे हो, उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है । मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए वही काफ़ी है और वह माफ़ करने वाला बड़ा रहीम है ।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ⑨

९. (आप) कह दीजिए कि मैं कोई बिल्कुल नया पैग़म्बर तो नहीं[3] और न मुझे यह मालूम है कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा । मैं तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी

---

[1] यह विषय पाक क़ुरआन में कई जगहों पर बयान है, दुनिया में इन उपास्यों (माबूदों) की दो क़िस्में हैं, एक तो बेजान पत्थर, पेड़-पौधे और सूरज, चाँद वग़ैरह हैं । अल्लाह उन को जीवन और बोलने की ताक़त अता करेगा और हमें यह वस्तुयें (चीज़ें) बोल कर बतलायेंगी कि हमें कभी भी इस का ज्ञान (इल्म) नहीं कि यह हमारी इबादत करते और तेरी इबादत में साझी बनाते थे । कुछ कहते हैं कि बोल कर नही उनकी हालत अपनी भावना (एहसास) ज़ाहिर करेगी والله أعلم । माबूदों की दूसरी क़िस्म वह है, जिस में अम्बिया, फ़रिश्ते और धर्मात्मा हैं, जैसे हज़रत ईसा और उज़ैर और अल्लाह के दूसरे नेक बंदे । यह अल्लाह के दरबार में उसी तरह जवाब देंगे जैसे ईसा (ﷺ) का जवाब क़ुरआन में लिखा है ।

[2] इस सच से मुराद जो उन के पास आया, पाक क़ुरआन है । इस के मोजिज़े और प्रभावशक्ति (तासीर की ताक़त) को देखकर वह इसे जादू कहते, फिर उस से भी हट कर या उस से भी बात न बनती तो कहते कि यह तो मोहम्मद (ﷺ) का अपना गढ़ा हुआ कथन (क़ौल) है ।

[3] यानी पहला और अनोखा रसूल तो नहीं हूँ बल्कि मुझ से पहले भी कई रसूल आ चुके हैं ।

तरफ़ की जाती है और मैं तो केवल वाज़ेह तौर से सावधान (बाख़बर) कर देने वाला हूँ।

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِۦ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِۦ فَـَٔامَنَ وَٱسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ⑩

१०. (आप) कह दीजिए कि अगर यह (क़ुरआन) अल्लाह ही की तरफ़ से हो और तुम ने उसे न माना हो और इस्राईल की औलाद का एक गवाह उस जैसी की गवाही भी दे चुका हो और वह ईमान भी ला चुका हो और तुम ने सरकशी की हो,[1] तो बेशक अल्लाह (तआला) ज़ालिम गुट को राह नहीं दिखाता।

وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَآ إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا۟ بِهِۦ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَآ إِفْكٌ قَدِيمٌ ⑪

११. और काफ़िरों ने ईमानवालों के बारे में कहा कि अगर यह (धर्म) अच्छा होता तो यह लोग उसकी तरफ़ हम से पहल न कर पाते और चूँकि उन्होंने क़ुरआन से हिदायत नहीं पाया तो यह कह देंगे कि यह पुराना झूठ है।

وَمِن قَبْلِهِۦ كِتَٰبُ مُوسَىٰٓ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ⑫

१२. और इस से पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत थी, और यह किताब है तसदीक़ करने वाली अरबी भाषा (ज़ुबान) में ताकि ज़ालिमों को डराये और परहेज़गारों के लिए ख़ुशख़बरी हो।

إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُوا۟ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسْتَقَٰمُوا۟ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ⑬

१३. बेशक जिन लोगो ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उस पर मज़बूत रहे तो उन पर न तो कोई डर होगा और न वे शोकग्रस्त (ग़मगीन) होंगे।

أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ خَٰلِدِينَ فِيهَا جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ⑭

१४. यह तो जन्नत में जाने वाले लोग हैं जो हमेशा उसी में रहेंगे उन अमलों के बदले जो वे किया करते थे।

---

[1] इस इस्राईली संतान (औलाद) के गवाह से कौन मुराद है? कुछ कहते हैं कि यह सामान्य (आम) है, इस्राईल की औलाद में से जो भी ईमान लाये वह मुराद है, कुछ कहते हैं कि मक्का का कोई इस्राईली निवासी मुराद है, क्योंकि यह सूर: मक्का में नाज़िल हुई।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿15﴾

१५. और हम ने इंसान को अपने माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है, उसकी माता ने उसे दुख झेलकर पेट में रखा और दुख सहन करके उसे जन्म दिया।[1] उस के गर्भ धारण (हमल) और उस के दूध छुड़ाने की मुद्दत तीस महीने की है[2] यहां तक कि जब वह अपनी पूरी व्यस्कता (रुश्द) को और चालीस साल की उम्र को पहुँचा तो कहने लगा हे मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे उस उपकार (नेमत) का शुक्रिया अदा कर सकूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर उपकार किया है, और यह कि मैं ऐसे नेकी के काम करूँ जिन से तू ख़ुश हो जाये और तू मेरी औलाद भी नेक बना, मैं तेरी तरफ़ ध्यान करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿16﴾

१६. यही वे लोग हैं जिन के नेकी के काम हम क़ुबूल कर लेते हैं और जिन के बुरे कामों को माफ़ कर देते हैं, (ये) स्वर्ग में जाने वाले लोगों में हैं, उस सच्चे वादे के अनुसार जो उन से किया जाता था।

---

[1] इस दुख और तकलीफ़ की चर्चा करके माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर ख़ास ज़ोर दिया है, जिस से यह भी मालूम होता है कि माता इस अच्छे सुलूक के हुक्म में पिता से पहले है, क्योंकि नौ महीने तक लगातार गर्भ की तकलीफ़ और फिर पैदाईश का दुख सिर्फ़ माँ ही झेलती है, ऐसे ही दूध पिलाने की पीड़ा भी अकेले माँ ही सहन करती है, बाप इस में हिस्सा नहीं लेता। इसीलिए हदीस में भी माँ के साथ अच्छे सुलूक को फ़ज़ीलत दी गई है और बाप का पद (मुक़ाम) उसके बाद बताया गया है। एक सहाबी ने नबी ﷺ से पूछा, 'मेरे अच्छे सुलूक का सब से ज़्यादा हक़दार कौन है?' आप ﷺ ने फ़रमाया : 'तुम्हारी माँ।' उस ने फिर यही पूछा, 'आप ने यही जवाब दिया।' तीसरी बार भी यही जवाब दिया। चौथी बार सवाल करने पर आप ने फ़रमाया: 'तुम्हारा बाप।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे व स्सिला पहला अध्याय)

[2] فِصَال (फ़िसाल) का मतलब दूध छुड़ाना है। इस से कुछ सहाबा ने यह साबित किया है कि कम से कम गर्भ की मुद्दत छः महीने है, यानी अगर छः महीने के बाद किसी औरत को बच्चा पैदा हो जाये तो वह बच्चा सही है नाजायज़ नहीं, इसलिए कि क़ुरआन ने दूध पिलाने की अवधि (मुद्दत) दो साल (चौबीस महीने) बताई है (सूरः लुक़मान-१४, सूरः बक़रः २३३) इस हिसाब से गर्भ की मुद्दत सिर्फ़ छः महीने ही बाक़ी रह जाती है।

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي
أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي ۖ وَهُمَا
يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿17﴾

१७. और जिस ने अपने माता-पिता से कहा कि उफ़ है तुम दोनों पर (तुम से मैं तंग हो गया) तुम मुझ से यही कहते रहोगे कि (मैं मरने के बाद दोबारा) जिन्दा किया जाऊंगा, मुझ से पहले भी समुदाय गुज़र चुके हैं, वह दोनों अल्लाह के दरबार में विनती (फ़रियाद) करते हैं (और कहते हैं) कि तुझे ख़राबी हो, तू ईमानदार बन जा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, वह जवाब देता है कि ये तो केवल पहले के लोगों के क़िस्से हैं।[1]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ
قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ
إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿18﴾

१८. (यही) वह लोग हैं जिन पर अल्लाह (के अज़ाब) का वादा सच हो गया, उन जिन्नों और इंसानों के गिरोहों के साथ जो उन से पहले गुज़र चुके हैं, यह निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से घाटे में थे।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿19﴾

१९. और हर एक को अपने-अपने अमलों के ऐतबार से मुक़ाम मिलेंगे ताकि उन्हें उन के अमलों के पूरे बदले दे और वे ज़ुल्म न किये जायेंगे।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ
طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا
فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ
تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ
تَفْسُقُونَ ﴿20﴾

२०. और जिस दिन काफ़िर नरक के किनारे लाये जायेंगे (कहा जायेगा) कि तुम ने अपनी नेकी दुनिया के जीवन में ही नष्ट कर दिये और उन से फ़ायेदा उठा चुके तो आज तुम्हें अपमान के अज़ाब का दण्ड दिया जायेगा, इस वजह से कि तुम धरती पर अहंकार (तकब्बुर) करते थे और इस वजह से भी कि तुम हुक्म की पैरवी (पालन) नहीं करते थे।

---

[1] माँ-बाप मुसलमान हों और औलाद काफ़िर तो वहाँ औलाद और माँ-बाप के बीच इसी तरह इख़्तेलाफ़ होता है, जिसकी एक मिसाल आयत में दी गई है।

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ۭ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿21﴾

२१. और आद के भाई को याद करो जबकि उस ने अपनी क़ौम वालों को अहक़ाफ़ में (रेत के टीले पर) डराया[1] और बेशक उस से पहले भी डराने वाले गुज़र चुके हैं और उस के बाद भी कि तुम अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरों की इबादत न करो। बेशक मैं तुम पर बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ।[2]

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿22﴾

२२. समुदाय (क़ौम) ने जवाब दिया कि क्या आप हमारे पास इसलिए आये हैं कि हमें अपने देवताओं (की पूजा) से रोक दें, तो अगर आप सच्चे हैं तो जिन अज़ाबों का आप वादा करते हैं उन्हें हम पर ला डालें।

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿23﴾

२३. (हज़रत हूद ने) कहा कि (इसका) इल्म तो अल्लाह ही के पास है, मैं तो जो संदेश देकर भेजा गया था वह तुम्हें पहुँचा रहा हूँ, लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग मूर्खता (बेवक़ूफ़ी) कर रहे हो।

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿24﴾

२४. फिर जब उन्होंने अज़ाब को बादल के रूप में देखा अपने मैदानों की तरफ़ आते हुए तो कहने लगे कि यह बादल हम पर बरसने वाला है, (नहीं) बल्कि हक़ीक़त (वास्तव) में यह बादल वह (प्रकोप) है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे, हवा है जिस में कष्टदायी यातनायें (अज़ाब) हैं।

---

[1] أحقاف (अहक़ाफ़) حِقْف (हिक़्फ़) का बहुवचन (जमा) है यानी रेत का ऊँचा लम्बा टीला, कुछ ने इसका मायने पहाड़ और गुफ़ा किया है। यह ईशदूत हूद (ﷺ) कि जाति, पहले आद के इलाक़े का नाम है जो हज़्रमूत (यमन) के क़रीब था। मक्का के काफ़िरों के झुठलाने की वजह से नबी ﷺ की तसल्ली के लिए पिछले अम्बिया की घटनाओं की चर्चा की जा रही है।

[2] يوم عظيم (बड़े दिन) से मुराद क़यामत का दिन है, जिसे उसकी भयानकता की वजह से उचित (मुनासिब) रूप से बड़ा दिन कहा गया है।

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ (25)

२५. जो अपने रब के हुक्म से हर चीज को ध्वस्त (हलाक) कर देगी, तो वे ऐसे हो गये कि उन के घरों के सिवाय कुछ दिखाई न देता था, पापियों के गिरोह को हम इसी तरह सजा देते हैं।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاهُمْ فِيمَا إِن مَّكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُم مِّن شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ (26)

२६. और निश्चित (यक़ीनी) रूप से हम ने (आद के समुदाय) को वह ताक़त दी थी जो तुम्हें दिया ही नहीं, और हम ने उन्हें कान, आँखें और दिल भी दे रखे थे, लेकिन उन के कानों, आँखों और दिलों ने उन्हें कुछ भी फ़ायेदा नहीं पहुँचाया[1] जबकि वह अल्लाह (तआला) की आयतों का इंकार करने लगे और जिस बात का वे मज़ाक (उपहास) उड़ाया करते थे, वही उन पर उलट पड़ी।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (27)

२७. और बेशक हम ने तुम्हारे क़रीबी (इलाके की) बस्तियाँ ध्वस्त (हलाक़) कर दीं[2] और (कई तरह की) हम ने निशानियाँ बयान कर दीं ताकि वे वापस आ जायें।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۖ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (28)

२८. तो अल्लाह की निकटता (क़ुरबत) हासिल करने के लिए उन्होंने जिन-जिन को देवता बना रखा था उन्होंने उनकी मदद क्यों न की, बल्कि वह तो उन से खोये गये, (बल्कि हक़ीक़त में) यह उन का सिर्फ़ झूठ और (पूरी तरह) इल्ज़ाम था।

---

[1] यह मक्कावासियों को संबोधित (मुख़ातिब) करके कहा जा रहा है कि तुम क्या हो? तुम से पहली जातियाँ जिन्हें हम ने ध्वस्त (हलाक) किया, शक्ति, बल और मान-मर्यादा में तुम से कहीं ज़्यादा थीं, लेकिन जब उन्होंने अल्लाह की दी हुई चीज़ों (कान, आँख और दिल) को सच सुनने, देखने और समझने के लिए प्रयोग (इस्तेमाल) नहीं किया तो आख़िर हम ने उन्हें बरबाद कर दिया और यह चीज़ें उन के कुछ काम न आ सकीं।

[2] समीपवर्ती (क़रीब) से आद, समूद और लूत की वह बस्तियाँ मुराद हैं जो हिजाज़ के क़रीब ही थीं और यमन, शाम और फ़िलिस्तीन की तरफ़ आते जाते उन से उनका गुज़र होता था।

وَإِذْ صَرَفْنَآ إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوٓا أَنصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ﴿29﴾

२९. और याद करो, जबकि हम ने जिनों के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ़ फेर दिया कि वे क़ुरआन सुनें, तो जब वे नबी के पास पहुँच गये तो (एक-दूसरे) से कहने लगे कि चुप हो जाओ,[1] फिर जब पाठ पूरा हो गया तो अपने समुदाय (क़ौम) को सावधान (आगाह) करने के लिए वापस लौट गये।

قَالُوا يَٰقَوْمَنَآ إِنَّا سَمِعْنَا كِتَٰبًا أُنزِلَ مِنۢ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيٓ إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿30﴾

३०. कहने लगे, हे हमारे समुदाय (क़ौम) के लोगो! हम ने निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से वह किताब सुनी है, जो मूसा (ﷺ) के बाद नाज़िल की गयी है, जो अपने से पहले की किताबों की पुष्टि (तसदीक़) करने वाली है, जो सच्चे दीन और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करती है।

يَٰقَوْمَنَآ أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَءَامِنُوا بِهِۦ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿31﴾

३१. हे हमारी क़ौम के लोगो! अल्लाह की तरफ़ दावत देने वाले का कहा मानो, उस पर ईमान लाओ,[2] तो (अल्लाह) तुम्हारे कुछ पाप माफ़ कर देगा और तुम्हें दुखद अज़ाब से पनाह देगा।[3]

---

[1] सहीह मुस्लिम की हदीस से मालूम होता है कि यह घटना (वाक़ेआ) मक्का के क़रीब वादिये नखला में घटी, जहाँ आप ﷺ अपने साथियों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जिन्नों को यह खोज थी कि आकाश पर हम पर बहुत कड़ाई कर दी गई है और अब वहाँ जाना लगभग नामुमकिन हो गया है, कोई ख़ास घटना ज़रूर हुई है जिस की वजह से ऐसा हुआ है। इसलिए पूरब और पश्चिम की कई दिशाओं में जिन्नों की टोलियाँ कारण (वजह) की खोज में फैल गईं, उन में से एक गिरोह ने यह क़ुरआन सुना और समझ लिया कि नबी ﷺ के भेजे जाने की घटना ही हम पर आकाश में रोक की वजह है और जिन्नों का यह गिरोह आप पर ईमान लाया और जाकर अपनी क़ौम को भी ख़बर किया।

[2] यह जिन्नों ने अपनी जाति को नबी ﷺ की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान लाने की दावत दी, इस से पहले पाक क़ुरआन के बारे में बतलाया कि यह तौरात के बाद एक और आसमानी किताब है जो सच्चे दीन और हिदायत की तरफ़ मार्गदर्शन (हिदायत) कराता है।

[3] इस विषय में विद्वानों (आलिमों) के बीच इख़्तिलाफ़ है कि अल्लाह तआला ने जिन्नात में जिन्नों में से रसूल (संदेष्टा) भेजे या नहीं। प्रत्यक्ष (वाज़ेह) क़ुरआनी आयतों से यही मालूम होता है कि जिन्नात में कोई रसूल (ईशदूत) नहीं हुआ, सभी अम्बिया और रसूल इंसानों ही में हुए हैं।

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (32)

३२. और जो इंसान अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहा न मानेगा तो वह धरती पर कहीं (भागकर अल्लाह को) विवश (मजबूर) नहीं कर सकता, और न अल्लाह के सिवाय उसकी कोई मदद करने वाला होगा, यह लोग खुली गुमराही में हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰۤى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (33)

३३. क्या वह नहीं देखते कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया और उन के पैदा करने से वह न थका, वह बेशक मुर्दों को जिन्दा करने की क़ुदरत रखता है, क्यों न हो? वह बेशक हर चीज पर क़ुदरत रखता है।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ (34)

३४. और वे लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, जिस दिन नरक के सामने लाये जायेंगे (और उन से कहा जायेगा) कि यह सच नहीं है? तो जवाब देंगे कि हाँ, क्यों नहीं। क़सम है हमारे रब की! (सच है)। (अल्लाह तआला) कहेगा कि अब अपने कुफ़्र के बदले अज़ाब का मज़ा (स्वाद) चखो।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ (35)

३५. तो (हे पैग़म्बर) तुम ऐसा सब्र (धैर्य) करो जैसा सब्र साहसी (बुलन्द हिम्मत) रसूलों ने किया, और उन के लिए (अज़ाब माँगने में) जल्दी न करो,[1] यह जिस रोज़ उस अज़ाब को देख लेंगे जिसका वादा दिये जाते हैं तो (यह महसूस होने लगेगा कि) दिन की एक घड़ी ही (दुनिया में) ठहरे थे,[2] यह है संदेश (पैग़ाम) पहुँचा देना, कुकर्मियों (बदकारों) के सिवाय कोई नष्ट (हलाक) न किया जायेगा।

---

[1] यह मक्का के काफ़िरों के बुरे काम के मुक़ाबले में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है और सब्र करने का उपदेश दिया जा रहा है।

[2] क़यामत का भयानक दृश्य (मंज़र) देखने के बाद उन्हें दुनिया का जीवन ऐसे ही लगेगा जैसे दिन की सिर्फ़ एक घड़ी यहाँ गुज़ारकर गये हैं।

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ

सूरतु मुहम्मद-४७

सूर: मुहम्मद* (ﷺ) मदीने में नाज़िल हुई इस में अड़तालीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿1﴾

१. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका[1] अल्लाह ने उन के अमल बेकार कर दिये।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿2﴾

२. और जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और उस पर भी यक़ीन किया जो मुहम्मद (ﷺ) पर नाज़िल की गयी है और हक़ीक़त में उन के रब की तरफ़ से सच (धर्म) भी वही है, अल्लाह ने उनके गुनाह मिटा दिये[2] और उनकी हालत का सुधार कर दिया।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِن رَّبِّهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ﴿3﴾

३. यह इसलिए कि काफ़िरों ने असत्य (बातिल) का अनुकरण (इत्तेबा) किया और ईमानवालों ने उस सच (धर्म) की इत्तेबा की, जो उन के रब की तरफ़ से है। अल्लाह (तआला) लोगों को उन के हाल इसी तरह बताता है।

فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ

४. तो जब काफ़िरों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो गर्दनों पर वार करो। यहां तक कि जब उन को अच्छी तरह कुचल डालो तो अब ख़ूब मज़बूत बन्दीगृह (जेल) में क़ैद करो। फिर (इख़्तियार है

* इसका दूसरा नाम 'अलकिताल' (जंग करना) भी है।

[1] कुछ ने इस से मुराद कुरैश के काफ़िर लिये हैं और कुछ ने अहले किताब (यहूदियों और इसाईयों) को लिया है, लेकिन यह आम है, इन के साथ सभी काफ़िर इस में शामिल हैं।

[2] यानी ईमान लाने के पहले की ग़ल्तियों और सुस्ती को माफ़ कर दिया, जैसाकि नबी ﷺ का भी क़ौल है कि इस्लाम पहले के सभी पापों को मिटा देता है। (सहीह जामे सग़ीर, अलबानी)

وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

कि) उपकार कर के आज़ाद कर दो,[1] या कुछ अर्थदण्ड (फ़िदिया) लेकर जब तक कि जंग (करने वाले) अपने हथियार रख दे, यही हुक्म है और अगर अल्लाह चाहता तो ख़ुद ही उन से बदला ले लेता, लेकिन (उसकी इच्छा यह है) कि तुम में से एक की परीक्षा (इम्तेहान) दूसरे से ले ले और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद कर दिये जाते हैं अल्लाह उन के अमल कभी बरबाद नहीं करेगा।

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾

५. उनकी हिदायत करेगा और उनकी हालत का सुधार कर देगा।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾

६. और उन्हें उस जन्नत में ले जायेगा जिस से उन्हें परिचित (पहचान) कर दिया गया है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾

७. हे ईमानवालो! अगर तुम अल्लाह (के धर्म) की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा[2] और तुम्हारे क़दम मज़बूत रखेगा।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾

८. और जो लोग काफ़िर हो गये उनका विनाश (तबाही) हो, अल्लाह ने उन के अमल को बरबाद कर दिया।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾

९. यह इसलिए कि वह अल्लाह की नाज़िल की हुई चीज़ से नाराज़ हुए, तो अल्लाह (तआला) ने भी उन के अमल बरबाद कर दिये।

---

[1] مَنّ (मन्न) का मतलब है बिना अर्थदण्ड (फ़िदिया) लिए एहसान करके आज़ाद कर देना और فداء (फ़िदाअ) का मतलब है कुछ बदला लेकर आज़ाद करना। क़ैदियों के बारे में हक़ दिया गया कि हालात को देखते हुए जो बात इस्लाम और मुसलमानों के लिए ज़्यादा बेहतर हो वह अपनाई जाये।

[2] अल्लाह की मदद करने का मतलब अल्लाह के दीन की मदद है, क्योंकि वह साधनों (ज़रियों) के ख़िलाफ़ अपने धर्म की मदद मोमिन बंदों के द्वारा ही करता है। यह मोमिन बंदे अल्लाह के धर्म की रक्षा और उसका प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग़) करते हैं तो अल्लाह उनकी मदद करता है यानी उन्हें काफ़िरों पर विजय (फ़त्ह) और प्रभुत्व (ग़लबा) देता है।

अَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ﴿10﴾

१०. क्या उन लोगों ने धरती में चल-फिर कर इसका निरीक्षण (मुआईना) नहीं किया कि उन से पहले के लोगों का क्या नतीजा हुआ? अल्लाह ने उन्हें बरबाद कर दिया और काफ़िरों के लिए इसी तरह की सज़ा हैं ।[1]

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿11﴾

११. वह इसलिए कि ईमानवालों का संरक्षक (मुहाफ़िज़) ख़ुद अल्लाह (तआला) है और इसलिए कि काफ़िरों का कोई संरक्षक नहीं ।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿12﴾

१२. जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये, उन्हें अल्लाह (तआला) यक़ीनी तौर से ऐसे बाग़ों में प्रवेश (दाख़िल) देगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं और जो लोग काफ़िर हुए वह (सांसारिक ही) फ़ायेदा उठा रहे हैं और जानवर की तरह खा रहे हैं, उनका (मूल) ठिकाना नरक है ।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّن قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿13﴾

१३. और हम ने कितनी बस्तियों को जो ताक़त में तेरी इस बस्ती से ज़्यादा थीं, जिस से तुझे निकाला । हम ने उन्हें नष्ट (हलाक) कर दिया है, जिनकी मदद करने वाला कोई न उठा ।

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ كَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُم ﴿14﴾

१४. क्या तो वह इंसान जो अपने रब की ओर से दलील पर हो उस इंसान के बराबर हो सकता है, जिस के लिए उस के बुरे काम अच्छे बना दिये गये हों और वह अपनी इच्छाओं का अनुसरण (पैरवी) करता हो?[2]

---

[1] यह मक्कावासियों को डराया जा रहा है कि तुम कुफ़्र से न रूके तो तुम्हें भी ऐसी ही यातना (अज़ाब) हो सकती है और पिछले काफ़िर समुदायों (क़ौमों) की तरह तुम्हें भी तबाह किया जा सकता है ।

[2] बुरे अमल से मुराद शिर्क और पाप है । मुराद वही है जो पहले कई जगहों पर गुज़र चुका है कि मोमिन, काफ़िर, मुश्रिक, एकेश्वरवादी, नेक लोग और बुरे लोग बराबर नहीं हो सकते, एक के लिये अल्लाह के दरबार में अच्छा बदला और जन्नत के सुख हैं, जबकि दूसरे के लिए नरक की भयानक सज़ा है । आगामी आयत में दोनों का नतीजा बताया जा रहा है, पहले उस जन्नत की अच्छाईयाँ और फ़ज़ीलतें हैं जिनका वादा सदाचारियों (परहेज़गारों) से है ।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾

१५. उस जन्नत की विशेषता (फ़जीलत) जिस का वादा परहेज़गारों से किया गया है, यह है कि उस में (शीतल) जल की नहरें वह रही हैं जो बदबूदार नहीं और दूध की नदियाँ हैं जिनका मज़ा नहीं बदला[1] और मदिरा की नहरें हैं, जिन में पीने वालों के लिए बहुत मज़ा है और बहुत साफ़ शहद की नहरें हैं [2] और उनके लिए वहाँ पर हर तरह के मेवे (फल) हैं और उन के रब की तरफ़ से माफ़ी है, क्या ये उस के बराबर हैं जो हमेशा आग में रहने वाले हैं और जिन्हें गर्म उबलता हुआ पानी पिलाया जायेगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ آنِفًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٦﴾

१६. और उन में कुछ (ऐसे भी हैं कि) तेरी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब तेरे पास से जाते हैं तो इल्म वालों से (सुस्ती और भोंदेपन की वजह से) पूछते हैं कि उस ने अभी क्या कहा था?[3] यही लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मोहर लगा दी है और वे अपनी इच्छाओं का अनुगमन (पैरवी) करते हैं।

---

[1] जिस तरह संसार में वह दूध कभी ख़राब हो जाता है जो गायों, भैंसों और बकरियों वग़ैरह के थनों से निकलता है, जन्नत का दूध चूँकि इस तरह जीवों के थनों से नहीं निकलेगा बल्कि उसकी नहरें होंगी, इसलिए जैसे वह बहुत मज़ेदार होगा ख़राब होने से भी सुरक्षित (महफ़ूज़) रहेगा।

[2] यानी शहद में जिन चीज़ों की मिलावट की उम्मीद होती है जिसे दुनिया में आम तौर से देखा जाता है, जन्नत में ऐसी कोई उम्मीद न होगी, बहुत पाक और साफ़ होगा, क्योंकि यह दुनिया की तरह शहद की मक्खियों से नहीं मिलेगा और उसकी भी नहरें होंगी। इसी वजह से हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम दुआ करो तो "जन्नतुल फ़िरदौस" के लिए दुआ करो, इसलिए कि यह जन्नत का मध्यम (दरमियाना) और सब से ऊँचा दर्जा है और वहीं से जन्नत की नहरें फूटती हैं और उस के ऊपर रहमान का अर्श है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाबु दर्जातिल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह)

[3] यह मुनाफ़िक़ीन (द्वयवादियों) का बयान है, चूँकि उनका इरादा सही नहीं होता था, इसलिए नबी ﷺ की बातें भी उन्हें समझ में नहीं आती थीं। वह सभा से बाहर आकर सवाल करते कि आप ﷺ ने क्या फ़रमाया?

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ﴿١٧﴾

१७. और जो लोग सन्मार्ग (हिदायत) हासिल कर चुके हैं, अल्लाह (तआला) ने उन्हें संमार्ग में और बढ़ा दिया है और उन्हें उन का सदाचार (तक़्वा) अता किया है।

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ ﴿١٨﴾

१८. तो क्या यह क़यामत का इंतेज़ार कर रहे हैं कि वह उन के पास अचानक आ जाये। बेशक उस के लक्षण (निशानियाँ) तो आ चुके हैं, फिर जब उन के पास क़यामत आ जाये उन्हें नसीहत हासिल करना कहाँ होगा?

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ﴿١٩﴾

१९. तो (हे नबी), आप यक़ीन कर लें कि अल्लाह के सिवाय कोई (सच्चा) उपास्य (माबूद) नहीं और अपने पापों की माफ़ी माँगा करें और ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों के पक्ष (हक़) में भी।[1] अल्लाह (तआला) तुम्हारे आने-जाने और निवास स्थान (रहने की जगह) को अच्छी तरह जानता है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۖ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۙ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٠﴾

२०. और जो लोग ईमान लाये वे कहते हैं कि कोई सूरः क्यों नाज़िल नहीं की गई, फिर जब कोई स्पष्ट (वाज़ेह) अर्थ वाली सूरः नाज़िल की जाती है और उस में जिहाद का बयान किया जाता है, तो आप देखते हैं कि जिन के दिलों में रोग है, वे आप की तरफ़ इस तरह देखते हैं कि जैसे उस इंसान की नज़र होती है जो मौत से बेहोश हो गया हो, बस बहुत बेहतर था उन के लिये।

---

[1] इस में नबी ﷺ को माफ़ी माँगने का हुक्म दिया गया है अपने लिए भी और ईमान वालों के लिए भी। इस्तिग़फ़ार (क्षमा माँगने) का बड़ा महत्व (अहमियत) और प्रधानता (फ़ज़ीलत) है। हदीसों में इस पर बड़ा ज़ोर दिया गया है। एक हदीस (कथन) में नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«يَا أَيُّهَا النَّاسُ! تُوبُوا إِلَى رَبِّكُمْ فَإِنِّي أَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً»

"लोगों, अल्लाह से तौबा और इस्तिग़फ़ार (क्षमा-याचना) किया करो, मैं भी अल्लाह से प्रतिदिन (रोज़आना) सत्तर बार से ज़्यादा तौबा-इस्तिग़फ़ार करता हूँ।" (सहीह बुख़ारी, बाबु इस्तिग़फ़ारिन नबीये फ़िल यौमि वल् लैलति)

طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ (21)

२१. आज्ञापालन (इताअत) करना और अच्छी बातें कहना, फिर जब काम निर्धारित (मुक़र्रर) हो जाये, तो अगर वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें, तो उन के लिए अच्छाई है।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوْا أَرْحَامَكُمْ (22)

२२. और तुम से यह भी दूर (नामुमकिन) नहीं कि अगर तुम को राज्य मिल जाये तो तुम धरती पर फ़साद पैदा कर दो और रिश्ते-नाते तोड़ डालो।

أُولٰئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمٰى أَبْصَارَهُمْ (23)

२३. यह वही लोग हैं जिन पर अल्लाह की धिक्कार (लानत) है और (अल्लाह ने) जिनकी सुनने की ताक़त और आंखों की रोशनी छीन ली है।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ أَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ أَقْفَالُهَا (24)

२४. क्या यह क़ुरआन में चिन्तन-मनन (ग़ौर-फ़िक्र) नहीं करते? या उन के दिलों पर उन के ताले लग गये हैं?

إِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰى أَدْبَارِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلٰى لَهُمْ (25)

२५. जो लोग अपनी पीठ के बल फिर गये इस के बाद कि उन के लिए हिदायत स्पष्ट (वाज़ेह) हो चुकी,[1] बेशक शैतान ने उन के लिए (उन के कामों को) शोभनीय (मुज़य्यन) कर दिया है और उन्हें ढील दे रखी है।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْأَمْرِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ (26)

२६. यह इसलिए[2] कि उन्होंने उन लोगों से जिन्होंने अल्लाह की नाज़िल की हुई (वह्यी) को बुरा समझा, यह कहा कि हम भी क़रीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में कुछ कामों में तुम्हारा कहा मानेंगे, और अल्लाह उनकी छिपी बातों को अच्छी तरह जानता है।

[1] इस से मुराद मुनाफ़िक़ीन (द्वयवादी) ही हैं, जिन्होंने जिहाद (धर्मयुद्ध) से भाग कर अपने कुफ़्र और धर्म परिवर्तन (बदलाव) को जाहिर कर दिया।

[2] 'ये' से तात्पर्य (मुराद) उनका इस्लाम धर्म से फिर जाना है।

२७. तो उनकी कैसी (दुर्गत) होगी, जब फ़रिश्ते उन की जान निकालते हुए उन के मुँह और कमर पर मारेंगे ।[1]

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿27﴾

२८. यह इस वजह से कि ये उस रास्ते पर चले जिस से (उन्होंने) अल्लाह (तआला) को नाराज़ कर दिया और उन्होंने उसकी ख़ुशी को बुरा जाना तो अल्लाह ने उन के अमल को अकारत कर दिया ।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ أَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿28﴾

२९. क्या उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग है, यह समझ रखा है कि अल्लाह उन के कपट को ज़ाहिर ही न करेगा ।[2]

أَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ أَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿29﴾

३०. और अगर हम चाहते तो उन सबको तुझे दिखा देते तो तू उन के मुँह से ही उनको पहचान लेता, और बेशक तू उन्हें उनकी बात के ढंग से पहचान लेगा, तुम्हारे सारे काम अल्लाह को मालूम हैं ।

وَلَوْ نَشَآءُ لَأَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۭ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿30﴾

३१. और बेशक हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे ताकि तुम में से जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को देख लें, और हम तुम्हारी हालतों की भी जाँच कर लें ।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا أَخْبَارَكُمْ ﴿31﴾

३२. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की, इस के बाद कि उन के लिए हिदायत वाज़ेह हो चुकी, यह कभी भी अल्लाह का कोई नुक़सान न करेंगे, जल्द ही उन के अमल वह बरबाद कर देगा ।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۭ وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿32﴾

---

[1] यह काफ़िरों की उस समय की हालत बयान की गई है जब फ़रिश्ते (यमदूत) उनकी जान निकालते हैं । जान फ़रिश्तों से बचने के लिए शरीर में छुपते और इधर-उधर भागते हैं तो फ़रिश्ते कड़ाई से उसे पकड़ते, खींचते और मारते हैं । यह विषय इस से पहले सूर: अन्आम-९३ और सूर: अंफाल-५० में भी गुज़र चुका है ।

[2] أضغان (अज़ग़ान) ضِغْن (ज़िग्न) का बहुवचन (जमा) है । जिसका मतलब द्वेष (हसद), कपट और वैर है । मुनाफ़िक़ों के दिलों में इस्लाम और मुसलमानों के विरोध (मुख़ालफ़त) में जो ईर्ष्या और हसद था, उस के हवाले से कहा जा रहा है कि क्या यह समझते हैं कि अल्लाह तआला उसे ज़ाहिर करने पर समर्थ (क़ादिर) नहीं है?

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوٓا۟ أَعْمَٰلَكُمْ ﴿33﴾

३३. हे ईमानवालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल का कहा मानो और अपने अमल को वरबाद न करो।

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا۟ وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَهُمْ ﴿34﴾

३४. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से (दूसरों को) रोका, फिर कुफ़्र की हालत में ही मर गये (यक़ीन कर लो कि) अल्लाह उन को कभी माफ़ न करेगा।

فَلَا تَهِنُوا۟ وَتَدْعُوٓا۟ إِلَى ٱلسَّلْمِ وَأَنتُمُ ٱلْأَعْلَوْنَ وَٱللَّهُ مَعَكُمْ وَلَن يَتِرَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ ﴿35﴾

३५. तो तुम कमज़ोर बन कर सुलह की दर्ख़ास्त पर न उतर आओ जबकि तुम ही (विजयी और) ग़ालिब रहोगे,[1] और अल्लाह तुम्हारे साथ है। (अपने इल्म के ज़रिये) नामुमकिन है कि वह तुम्हारे अमल बरबाद कर दे।

إِنَّمَا ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِن تُؤْمِنُوا۟ وَتَتَّقُوا۟ يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ أَمْوَٰلَكُمْ ﴿36﴾

३६. हक़ीक़त में दुनियावी जीवन तो खेलकूद है, और अगर तुम ईमान लाओगे और संयम (तक़वा) अपनाओगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे आमाल का बदला देगा और वह तुम से तुम्हारे धन नहीं माँगता।

إِن يَسْـَٔلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا۟ وَيُخْرِجْ أَضْغَٰنَكُمْ ﴿37﴾

३७. अगर वह तुम से तुम्हारा माल माँगे और बल देकर माँगे तो तुम उस से कंजूसी करने लगोगे और वह तुम्हारे खोट को ज़ाहिर कर देगा।

[1] मुराद यह है कि जब तुम तादाद और ताक़त में दुश्मन पर प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) और बुलन्द हो तो ऐसी हालत में काफ़िरों के साथ सुलह और कमज़ोरी का प्रदर्शन (इज़हार) न करो, बल्कि कुफ़्र पर ऐसी कड़ी मार लगाओ कि अल्लाह का धर्म ऊँचा हो जाये, ग़ालिब और भारी होते हुए कुफ़्र के साथ सुलह का मतलब कुफ़्र के असर को बढ़ाने में मदद देना है, यह एक बड़ा गुनाह है। इसका मतलब यह नहीं कि काफ़िरों के साथ सुलह करने की इजाज़त नहीं है, यह इजाज़त निश्चित रूप से है लेकिन हर समय नहीं, सिर्फ़ उस समय जब मुसलमान तादाद में कम और साधनों में नीचे हों, ऐसी हालत में लड़ाई के मुक़ाबिले सुलह में ज़्यादा फ़ायेदा है ताकि इस मौक़ा का फ़ायेदा हासिल कर के मुसलमान भरपूर तैयारी कर लें, जैसे नबी ﷺ ने मक्का के काफ़िरों से जंग न करने का दस साल के लिए समझौता किया था।

هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ ۚ وَإِن تَتَوَلَّوْا۟ يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوٓا۟ أَمْثَٰلَكُم (38)

३८. ख़बरदार! तुम वह लोग हो कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए बुलाये जाते हो तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं, और जो कंजूसी करता है वह बेशक अपने आप से कंजूसी करता है। अल्लाह (तआला) बेनियाज़ है और तुम मुहताज हो,[1] और अगर तुम मुंह फेरने वाला हो जाओ तो वह तुम्हारे बदले तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा जो फिर तुम जैसे न होंगे।

سُورَةُ الفَتْحِ

सूरतुल फ़त्ह-४८

सूर: फ़त्ह* मदनी सूर: है, इस में उन्तीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] यानी अल्लाह तुम्हें ख़र्च करने की तरग़ीब (प्रोत्साहन) इसलिए नहीं देता कि उसे तुम्हारे माल की ज़रूरत है। नहीं, वह तो ग़नी है, बेनियाज़ है, वह तो तुम्हारे ही फ़ायदे के लिए यह हुक्म देता है कि एक तो तुम्हारे अपने मनों की पाकी हो। दूसरे, ग़रीबों की ज़रूरत पूरी हो। तीसरे, तुम दुश्मन पर ग़ालिब और उच्च रहो, इसलिए अल्लाह की मदद और दया (रहमत) की ज़रूरत तुम को है न कि अल्लाह को।

* ६ हिज्री में रसूलुल्लाह ﷺ और लगभग एक हज़ार चार सौ सहाबा उमरे के लिए मक्का गये, लेकिन मक्का के निकट हुदैबिया के मुक़ाम पर काफ़िरों ने आप को रोक दिया और उमरा नहीं करने दिया। आप ने हज़रत उस्मान ﷺ को अपना नुमाईदा बनाकर मक्का भेजा ताकि वह कुरैश के सरदारों से बात कर के उन्हें मुसलमानों को उमरा करने की इजाज़त देने पर तैयार करें, लेकिन हज़रत उस्मान ﷺ के मक्का जाने के बाद उनकी शहादत (क़त्ल) की अफ़वाह फैल गई, जिस पर आप ﷺ ने सहाबा से हज़रत उस्मान ﷺ का बदला लेने के लिए "बैअत" प्रतिज्ञा करायी जो 'बैअते रिज़्वान' कहलाती है। हुदैबिया से मदीने की तरफ़ वापस आते हुए मार्ग में यह सूर: नाज़िल हुई, जिस में सुलह को खुली विजय कहा गया, क्योंकि यह सुलह मक्का के विजय का आधार साबित हुई और इस के दो साल बाद ही मुसलमानों ने मक्का में विजेता के रूप में प्रवेश किया। इसी वजह से कुछ सहाबा कहते थे कि तुम मक्का के विजय को विजय मानते हो और हम हुदैबिया के समझौते को विजय गिनते हैं, और नबी ﷺ ने इस सूर: के बारे में फ़रमाया कि आज की रात मुझ पर वह सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे दुनिया और उसकी हर चीज़ से ज़्यादा प्यारी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी)

१. बेशक (हे नबी)! हम ने आप को एक खुली फ़त्ह (विजय) अता की है।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿1﴾

२. ताकि जो कुछ तेरे पाप पहले हुए और जो पीछे हुए सबको अल्लाह (तआला) माफ़ कर दे और तुझ पर अपनी नेमत पूरी कर दे और तुझे सीधे रास्ते पर चलाये।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿2﴾

३. और आप को एक भरपूर मदद अता करे।

وَيَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ﴿3﴾

४. वही है जिस ने मुसलमानों के दिल में सुकून (और आत्मविश्वास) डाल दिया, ताकि वे अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जायें, और आकाशों और धरती की (सारी) सेनायें अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿4﴾

५. ताकि मुसलमान मर्दों और औरतों को उन स्वर्गों में ले जाये, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे और उन से उन के पाप को मिटा दे और अल्लाह के क़रीब यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿5﴾

६. और ताकि उन मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मूर्तिपूजक मर्दों और मूर्तिपूजक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह (तआला) के बारे में बदगुमानी रखने वाले हैं। (हक़ीक़त में) उन्हीं पर बुराई का फेरा है। अल्लाह उन पर नाराज़ हुआ और उन्हें धिक्कारा और उन के लिए नरक तैयार किया, और वह लौटने की (बड़ी) बुरी जगह है।

وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿6﴾

७. और अल्लाह ही के लिए आकाशों और धरती की सेनायें हैं और अल्लाह शक्तिशाली (ग़ालिब) और हिक्मत वाला है।

وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿7﴾

८. बेशक हम ने तुझे गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और बाख़बर करने वाला बनाकर भेजा है।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿8﴾

لِّتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ۚ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٩﴾

९. ताकि (हे मुसलमानो!) तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसका आदर करो, और अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) को सुबह-शाम बयान करो।

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهُ اللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿10﴾

१०. बेशक जो लोग तुझ से बैअत (अल्लाह और उस के रसूल की इताअत और पैरवी का वादा ताकीद से ज़ाहिर करना) करते हैं वह बेशक अल्लाह ही से बैअत करते हैं।[1] उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है,[2] तो जो इंसान वादा तोड़े वह अपने आप पर ही वादा तोड़ता है[3] और जो इंसान उस वादा को पूरा करे जो उस ने अल्लाह के साथ किया है तो उसे जल्द ही अल्लाह बहुत बड़ा बदला (नेकी) देगा।

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿11﴾

११. देहातियों में से जो पीछे छोड़ दिये गये थे वे अब तुझ से कहेंगे कि हम अपने माल और औलाद में लगे रह गये तो आप हमारे लिए माफ़ी की दुआ कीजिए,[4] ये लोग अपने मुहों से वह कहते हैं जो उन के दिल में नहीं है।[5] आप जवाब दे दीजिए कि तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ़ से किसी बात का भी हक़ कौन रखता है अगर वह तुम्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे, या तुम्हें कोई फ़ायेदा पहुँचाना चाहे, बल्कि तुम जो कुछ कर रहे हो

---

[1] यह बैअत हक़ीक़त में अल्लाह ही की है, क्योंकि उसी ने जिहाद (धर्मयुद्ध) का हुक्म दिया है। जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया कि यह अपनी जानों और मालों का जन्नत के बदले अल्लाह से सौदा है। (अत्तौबा-१११) यह इसी तरह है, जैसे ﴿وَمَن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾ (अन-निसाअ :८०)

[2] आयत से वही 'बैअते रिज्वान' मुराद है जो नबी ﷺ ने हज़रत उस्मान की शहादत (क़त्ल) की ख़बर सुनकर उनका बदला लेने के लिए हुदैबिया में मौजूद १४ या १५ सौ मुसलमानों से ली थी।

[3] نَكَثَ (वादा तोड़ने) से मुराद यहाँ बैअत तोड़ देना यानी वादा के मुताबिक़ लड़ाई में हिस्सा न लेना है, यानी जो इंसान ऐसा करेगा तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा।

[4] इससे मदीने के आसपास आबाद जातियाँ गिफ़ार, मुज़ैनह, जुहैनह, अस्लम और दूसरी जातियाँ मुराद हैं।

[5] यानी मुँह पर तो यह है कि हमारे पीछे हमारे घरों और बाल-बच्चों का संरक्षक (वली) कोई नहीं था। इसलिए हमें ख़ुद ही रुकना पड़ा, किन्तु हक़ीक़त में उनका पीछे रहना निफ़ाक़ (अवसरवाद) और मौत के डर के कारण (सबब) था।

उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ إِلَىٰٓ أَهْلِيْهِمْ أَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ﴿12﴾

१२. (नहीं) बल्कि तुम ने तो यह समझ रखा था कि पैग़म्बर और मुसलमानों का अपने घरों की तरफ़ लौट आना बिल्कुल नामुमकिन है और यही ख़्याल तुम्हारे दिलों में बस गया था; तुम ने बुरा ख़्याल कर रखा था। (हक़ीक़त में) तुम लोग हो भी नष्ट (हलाक) होने वाले।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَإِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿13﴾

१३. और जो इंसान अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान न लाये तो हम ने भी ऐसे काफ़िरों के लिए दहकती (प्रज्वलित) आग तैयार कर रखी है।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿14﴾

१४. और आकाशों और धरती का राज्य (मुल्क) अल्लाह ही के लिए है, जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।[1]

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ أَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۭ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿15﴾

१५. जब तुम (लड़ाई से मिले) परिहार (ग़नीमत) लेने जाने लगोगे तो तुरन्त ये पीछे छोड़े हुए लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने की आज्ञा दीजिए[2] वे चाहते हैं कि अल्लाह (तआला) के कथन (क़ौल) को बदल दें।[3] (आप) कह दें कि अल्लाह (तआला) पूर्व ही में कह

[1] इस में पिछड़ने वालों के लिए माफ़ी माँगने और अल्लाह की तरफ़ ध्यान करने का प्रलोभन (तरग़ीब) है कि अगर वह निफ़ाक़ से तौबा कर लें तो अल्लाह तआला उन्हें माफ़ कर देगा, वह बहुत माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

[2] इस में ख़ैबर के युद्ध (जंग) की चर्चा है, जिसकी विजय की ख़ुशख़बरी अल्लाह ने हुदैबियह में दी थी, और अल्लाह ने यह भी फ़रमाया था कि यहाँ से जितना भी माल मिलेगा वह केवल हुदैबियह में शामिल लोगों का हिस्सा है। जैसाकि हुदैबियह से वापसी के बाद जब आप ने यहूदियों के लगातार वादा तोड़ने की वजह से ख़ैबर पर चढ़ाई की योजना बनाई तो उन पिछड़ों ने भी मात्र युद्ध-धन (माले ग़नीमत) हासिल करने के लिए साथ जाने का इरादा ज़ाहिर किया, जिसे क़ुबूल नहीं किया गया। आयत में मग़ानिम से मुराद ख़ैबर में मिला माल ही है।

[3] अल्लाह के वादे से मुराद अल्लाह का ख़ैबर से मिले माल (ग़नीमत) को हुदैबियह वालों के लिए विशेष करने का वादा है। मुनाफ़िक़ीन (अवसरवादी) इस में हिस्सा लेकर अल्लाह के वादे को बदलना चाहते थे।

चुका है कि तुम कभी हमारा अनुगमन (पैरवी) न करोगे तो वे उसका जवाब देंगे (नहीं-नहीं) बल्कि तुम हम से हसद रखते हो। (हक़ीक़त बात यह है) कि वे लोग बहुत ही कम समझते है।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿16﴾

१६. (आप) पीछे छोड़े हुए देहातियों से कह दीजिए कि जल्द ही तुम एक बड़ी बहादुर क़ौम की तरफ़ बुलाये जाओगे कि तुम उन से लड़ाई करोगे या वे मुसलमान हो जायेंगे, तो अगर तुम आज्ञापालन (इताअत) करोगे तो अल्लाह (तआला) तुम्हें बहुत अच्छा बदला देगा, और अगर तुम ने मुख फेर लिया जैसाकि तुम इस से पहले मुँह फेर चुके हो, तो वह तुम्हें कष्टदायी यातना (अज़ाब) देगा।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿17﴾

१७. अन्धे पर कोई पाप नहीं, न लंगड़े पर कोई पाप है और न रोगी पर कोई पाप है।[1] और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करे, उसे अल्लाह ऐसे स्वर्ग में दाख़िल करेगा जिस के (पेड़ों के) नीचे से नहरें बह रही है, और जो मुँह फेर ले उसे कष्टदायी यातनायें (अज़ाब) देगा।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿18﴾

१८. बेशक अल्लाह (तआला) ईमानवालों से ख़ुश हो गया जब वे पेड़ के नीचे तुझ से बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे।[2] उन के दिलों में जो कुछ था उसे उस ने मालूम कर लियाऔर उन पर

---

[1] अंधेपन और लंगड़ेपन की वजह से चल फिर न सकना, यह दोनों तो ज़रूरी मजबूरी है, ऐसे मजबूर या उनकी तरह दूसरे लाचारों को जिहाद से अलग कर दिया गया। حرج (हरज) का मायने बुराई है, इन के अलावा जो रोग हैं वह सामयिक (वक़्ती) मजबूरी हैं, जब तक वह हक़ीक़त में रोगी हैं जिहाद में हिस्सा लेने से अलग हैं, रोग दूर होते ही वह जिहाद में दूसरे मुसलमानों के साथ भाग (हिस्सा) लेंगे।

[2] यह उन बैअते रिज़्वान में शामिल सहाबा के लिए अल्लाह की ख़ुशी और उन के पक्के-सच्चे मोमिन होने का प्रमाण (सुबूत) है, जिन्होंने हुदैबियह में एक पेड़ के नीचे इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) की कि वह मक्का के क़ुरैश से लड़ेंगे और भागेंगे नहीं।

शान्ति (सुकून) उतारा और उन्हें करीब की विजय प्रदान (अता) की।

وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّأْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿19﴾

१९. और बहुत से परिहार (ग़नीमत) जिन्हें वे हासिल करेंगे, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَأْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿20﴾

२०. अल्लाह तआला ने तुम से बहुत सारी ग़नीमतों (परिहारों) का वादा किया है जिन्हें तुम प्राप्त (हासिल) करोगे, बस यह तो तुम्हें जल्द ही अता कर दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये[1] ताकि ईमानवालों के लिए यह एक निशानी हो जाये, और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाये।

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿21﴾

२१. और तुम्हें दूसरे (ग़नीमतें) भी देगा जिन पर अब तक तुम ने क़ाबू नहीं पाया। अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपने क़ाबू में रखा है, और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ादिर है।

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿22﴾

२२. और अगर तुम से काफ़िर लड़ाई करते तो बेशक उल्टे पीठ दिखाकर भागते, फिर न तो कोई कार्यक्षम (वली) पाते, न मदद करने वाला।[2]

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿23﴾

२३. अल्लाह के उस नियम के अनुसार जो पहले से चला आया है,[3] और तू कभी भी अल्लाह के नियम को बदला हुआ न पाओगे।

---

[1] हुदैबियह में काफ़िरों के हाथ और ख़ैबर में यहूदियों के हाथ अल्लाह ने रोक दिये, यानी उन के हौसले पस्त कर दिया और वे मुसलमानों से लड़ न सके।

[2] यह हुदैबियह में संभावित (इमकानी) लड़ाई के बारे में कहा जा रहा है कि अगर यह मक्का के कुरैश सुलह न करते बल्कि लड़ने का रास्ता अपनाते तो यह पीठ फेर कर भाग जाते, कोई उनका सहायक (मददगार) न होता। मतलब यह है कि हम वहाँ तुम्हारी मदद करते और हमारे मुक़ाबिले में किसे ठहरने की ताक़त है?

[3] यानी यह अल्लाह की रीति पहले से चली आ रही है कि जब कुफ़्र और ईमान के बीच निर्णायक (फ़ैसलाकुन) लड़ाई का मौक़ा आता है तो अल्लाह ईमानवालों की मदद करके सच को ऊँचा करता है, जैसे इस रीति के अनुसार बद्र में तुम्हारी मदद की गई।

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿24﴾

२४. वही है जिस ने खास मक्का में काफ़िरों के हाथों को तुम से और तुम्हारे हाथों को उन से रोक लिया, इस के बाद कि उस ने तुम्हें उन पर विजयी कर दिया था, और तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह (तआला) उसे देख रहा है।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَن يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَن تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِّيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿25﴾

२५. यही वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम को मस्जिदे हराम से रोका और बलि (क़ुर्बानी) के लिए रूके हुए जानवरों को उस की जगह तक पहुँचने से (रोका),[1] और अगर ऐसे (बहुत-से) मुसलमान मर्द और (बहुत-सी) मुसलमान औरतें न होतीं, जिन की तुम को ख़बर न थी कि तुम उनको रौंद दोगे जिस पर उन की वजह से तुम को भी अनजाने में हानि पहुँचती (तो तुम्हें लड़ने की इजाज़त दे दी जाती, लेकिन ऐसा नहीं किया गया) ताकि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा (रहमत) में जिस को चाहे शामिल कर ले और अगर ये अलग-अलग होते तो उन में जो काफ़िर थे, हम उन को कष्टदायी दण्ड (अज़ाब) देते।

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿26﴾

२६. जबकि उन काफ़िरों ने अपने दिलों में हमिय्यत (पक्षपात भावना) को जगह दिया और पक्षपात भी जाहीलियत का, तो अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी तरफ़ से शान्ति नाज़िल किया और मुसलमानों को संयम (तक़्वा) की बात पर दृढ़ (मज़बूत)

[1] هَدْيٌ (हदी) उस जानवर को कहा जाता है जिसे हज या उमरा करने वाला अपने साथ मक्का ले जाता है। مَحِلٌّ (महिल्ल) से मुराद क़ुर्बानी की जगह है जहाँ उनको ले जाकर ज़िब्ह किया जाता है। यह जगह उमरा करने वालों के लिए अज्ञानताकाल (जाहीलियत) में 'मर्वह' पहाड़ी के पास और हाजियों के लिए 'मिना' था। इस्लाम में क़ुर्बानी की जगह मक्का, मिना और पूरा हरम है। مَعْكُوفًا (माकूफ़न) हाल है, यानी यह जानवर इस इंतेज़ार में रूके थे कि मक्के में प्रवेश (दाख़िल) करें ताकि उन्हें वध (ज़िब्ह) किया जाये। मुराद यह है कि इन काफ़िरों ने ही तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका था और जो जानवर तुम्हारे साथ थे उन्हें भी क़ुर्बानी की जगह तक नहीं पहुँचने दिया।

रखा[1] और वे इस के लायक़ और ज़्यादा हक़दार थे, और अल्लाह (तआला) हर चीज़ को अच्छी तरह जानता है।

लَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ۗ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿27﴾

२७. हक़ीक़त में अल्लाह ने अपने रसूल को ख़्वाब सच दिखाया कि अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर पूरे अमन व अमान के साथ मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे, सिर मुंडवाते हुए और सिर के बाल कटवाते हुए (शान्ति के साथ) निर्भीक (बेख़ौफ़) होकर,[2] वह उन बातों को जानता है जिन्हें तुम नहीं जानते, तो उस ने उस से पहले एक क़रीब की जीत तुम्हें दी।[3]

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهُ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿28﴾

२८. वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म (दीन) के साथ भेजा ताकि उसे हर धर्म पर ग़ालिब[4] करे और अल्लाह (तआला) काफ़ी है गवाही देने वाला।

---

[1] इस से मुराद तौहीद और रिसालत का कलिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह" है। जिसे हुदैबियह के दिन मुश्रेकीन (बहुदेववादियों) ने इंकार किया। (इब्ने कसीर) या वह सब्र और शान्ति (सम्मान) है जिसका प्रदर्शन (इज़हार) उन्होंने हुदैबियह में किया, या वह प्रतिज्ञा (अहद) का पालन और उस पर मज़बूती है, जो संयम (तक़्वा) का नतीजा है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] हुदैबिया की घटना (वाक़ेआ) से पहले रसूलुल्लाह ﷺ को स्वप्न में मुसलमानों के साथ बैतुल्लाह (अल्लाह के घर कअबा) में जाकर तवाफ़ और उमरा करते दिखाया गया। नबी का सपना प्रकाशना (वह्यी) के बराबर होता है, फिर भी इस सपने में यह निश्चित नहीं था कि यह इसी साल होगा, किन्तु नबी ﷺ और मुसलमान इसे बड़ी ख़ुशख़बरी समझते हुए उमरे के लिए तुरन्त तैयार हो गये, इसके लिए लोगों में एलान करा दिया और चल पड़े, आख़िर में हुदैबिया में वह समझौता हुआ, जिसका विवरण अभी गुज़रा जबकि अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में यह स्वप्न आगामी साल पूरा होना था, जैसाकि आगामी वर्ष मुसलमानों ने बहुत सुकून के साथ यह उमरा किया और अल्लाह ने अपने पैग़म्बर के सपने को सच कर दिया।

[3] इस से ख़ैबर और मक्का की फ़त्ह के अलावा सुलह के नतीजे में जो ज़्यादातर मुसलमान हुए वह भी मुराद है, क्योंकि वह भी फ़त्ह का एक महान रूप है। हुदैबिया समझौते के मौक़ा पर मुसलमान डेढ़ हज़ार थे, इस के दो साल बाद जब मुसलमान मक्के में विजेता (फ़ातेह) की हैसियत से दाख़िल हुए तो उन की संख्या (तादाद) दस हज़ार थी।

[4] इस्लाम का यह असर तो दूसरे धर्मों पर सुबूतों के बिना पर तो हर समय मान्य है, फिर भी दुनियावी और फ़ौजी आधार पर भी पहले ज़माने में और उस के बाद जब तक मुसलमान अपने धर्म पर काम करते रहे उनका प्रभुत्व (ग़लबा) रहा, और आज भी यह माद्दी (भौतिक) ग़लबा संभव (मुमकिन) है जबकि मुसलमान, मुसलमान बन जायें।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَي الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ٻ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ڗ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَــظَ فَاسْتَوٰى عَلٰي سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا (29)

२९. मोहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं काफ़िरों पर कठोर हैं आपस में रहम दिल हैं, तू उन्हें देखेगा कि रूकूअ और सज्दे कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) की कृपा (फ़ज़्ल) और ख़ुशी की कामना में हैं। उनका निशान उन के मुँह पर सज्दों के असर से है, उनका यही गुण (उदाहरण) तौरात में है और उनका उदाहरण (मिसाल) इंजील में है उस खेती के तरह जिसने अपना कोंपल निकाला, फिर उसे मज़बूत किया और वह मोटा हो गया, फिर अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया और किसानों को ख़ुश करने लगा[1] ताकि उन की वजह से काफ़िरों को चिढ़ायें, और ईमानवालों और नेक लोगों से अल्लाह ने माफ़ी का और बहुत बड़ी नेकी का वादा किया है।[2]

सूरतुल हुजुरात-४९

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ

सूर: हुजुरात* मदीने में नाज़िल हुई, इस में अट्ठारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

---

[1] यह सहाबा केराम का दृष्टान्त (मिसाल) बयान किया गया है। शुरू में वह कम थे, फिर ज़्यादा और शक्तिशाली हो गये, जैसे खेती शुरू में कमज़ोर होती है, फिर दिन प्रतिदिन मज़बूत होती जाती है यहाँ तक कि दृढ़ (मज़बूत) तने पर खड़ी हो जाती है।

[2] इस पूरी आयत का एक-एक भाग सहाबा केराम की अज़मत, फ़ज़ीलत और बड़े पुण्य (अज्र) को वाज़ेह कर रहा है। इस के बाद भी सहाबा (नबी के साथियों) के ईमान में शक करने वाला मुसलमान होने का दावा करे तो उसे मुसलमान होने के दावे में कैसे सच्चा समझा जा सकता है ?

* यह तिवाले मुफ़स्सल (विस्तृत) की पहली सूरह है, हुजुरात से नाज़िआत तक की सूरतें तिवाले मुफ़स्सल कहलाती हैं, कुछ ने सूरह 'क़ाफ़' को पहली सूरह कहा है। (इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर) इन का फ़ज्र (भोर) की नमाज़ में पढ़ना मस्नून और मुस्तहब (उत्तम) है। सूरह अबस से सूरहतुश्शम्स तक औसाते मुफ़स्सल (मध्यम) और सूरह ज़ुहा से अन्नास तक क़िसारे मुफ़स्सल (छोटी) हैं। ज़ोहर और ईशा में औसात और मग़रिब में क़िसार पढ़नी मुस्तहब (उत्तम) हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿1﴾

१. हे ईमानवालो! अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ो[1] और अल्लाह से डरते रहा करो। बेशक अल्लाह (तआला) सुनने जानने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿2﴾

२. हे ईमानवालो! अपनी आवाज़ को नबी की आवाज़ से ऊँचा न करो और उन से ऊँची आवाज़ में बात करो जैसे आपस में एक-दूसरे से करते हो। (कहीं ऐसा न हो) कि तुम्हारे अमल बेकार हो जायें और तुम्हें पता भी न हो।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿3﴾

३. हक़ीक़त में जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने अपनी आवाज़ धीमी रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने सदाचार (तक़्वा) के लिए जाँच लिया है, उन के लिए माफ़ी है और बड़ा पुण्य (अज्र) है।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿4﴾

४. बेशक जो लोग आप को कमरों के पीछे से पुकारते हैं उन में से ज़्यादातर (पूरी तरह से) बुद्धिहीन (बेअक़्ल) हैं।[4]

---

[1] इसका मतलब है कि धर्म के बारे में ख़ुद कोई फ़ैसला न करो, न अपनी समझ और विचार को तरजीह (प्रधानता) दो, बल्कि अल्लाह और रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करो, अपनी तरफ़ से धर्म में अधिकता (इज़ाफ़ा) या बिदआत (नई बातें) बनाना अल्लाह और रसूल से आगे बढ़ने की जुरअत है, जो किसी भी ईमान वाले के लिए लायक़ नहीं। इसी तरह कोई फ़तवा क़ुरआन और हदीस में विचार किये बिना न दिया जाये और देने के बाद अगर शरीअत के नुसूस (क़ुरआन और हदीस) के ख़िलाफ़ होना वाज़ेह हो जाये तो उस पर अड़े रहना भी इस आयत में दी गई इजाज़त के ख़िलाफ़ है। मुसलमान का आचरण (अख़्लाक़) तो अल्लाह और रसूल के हुक्म के आगे समर्पण और अनुपालन (पैरवी) के लिए सिर झुका देना है, न कि उन के मुक़ाबले में अपनी बात या किसी इमाम के विचार (ख़्याल) पर अड़े रहना।

[2] इस में रसूलुल्लाह ﷺ के लिये आदर-सम्मान का बयान है, जिसकी हर मुसलमान से माँग है।

[3] इस में उन लोगों की तारीफ़ है जो रसूलुल्लाह ﷺ की मान-मर्यादा का ध्यान रखते हुए अपनी आवाज़ धीमी रखते थे।

[4] यह आयत क़बीला बनू तमीम के कुछ आराबियों (गँवार लोगों) के बारे में नाज़िल हुई, जिन्होंने एक दिन दोपहर के समय जो रसूलुल्लाह ﷺ के आराम का समय था, कमरे से बाहर

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾

५. और अगर ये लोग यहाँ तक सब्र करते कि आप (ख़ुद) उन के पास आ जाते तो यही उन के लिए बेहतर होता, और अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ﴿٦﴾

६. हे ईमानवालो! अगर तुम्हें कोई फ़ासिक़ ख़बर दे तो तुम उसकी अच्छी तरह छानबीन कर लिया करो,[1] (ऐसा न हो) कि जानकारी न होने की वजह से किसी समुदाय (क़ौम) को नुक़सान पहुँचा दो, फिर अपने किये पर पछतावो।

وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ۚ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ ﴿٧﴾

७. और जान रखो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, अगर वह बहुत-सी बातों में तुम्हारा कहा करते रहें तो तुम कठिनाई में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह (तआला) ने ईमान को तुम्हारे लिए प्यारा बना दिया है और उसे तुम्हारे दिल में सुशोभित (मुज़य्यन) कर दिया है और कुफ़्र को और बुराईयों को और नाफ़रमानी को तुम्हारी नज़र में नापसन्द बना दिया है, यही लोग रास्ता पाये हुए हैं।

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٨﴾

८. अल्लाह के उपकार (फ़ज़्ल) और अनुग्रह (नेमत) से,[2] और अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है।

खड़े होकर जन-साधारण (आम लोगों) के अंदाज़ में हे मुहम्मद, हे मुहम्मद की आवाज़ लगायी, ताकि आप ﷺ बाहर आयें। (मुसनद अहमद ३\४८८-६\३९४) अल्लाह ने फ़रमाया कि इन में ज़्यादातर बुद्धिहीन (बेअक़्ल) हैं, इसका मतलब यह हुआ कि नबी ﷺ के प्रताप (जलाल) और आप की मान-मर्यादा की माँगों का ध्यान न रखना बेवक़ूफ़ी है।

[1] यह आयत ज़्यादातर भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) के विचार में हज़रत वलीद बिन उक़्बा के बारे में उतरी है, जिन्हें नबी ﷺ ने बनू मुस्तलिक़ के सदक़े (धर्मदान) वसूल करने के लिए भेजा था, लेकिन उन्होंने आकर ख़बर दी कि उन्होंने ज़कात देने से इंकार कर दिया है, जिस पर आप ने उन पर हमला करने का इरादा किया, फिर पता लग गया कि यह बात ग़लत थी और वलीद ؓ वहाँ गये ही नहीं।

[2] यह आयत भी सहाबा ؓ की इज़्ज़त और उन के ईमान और सुधार और संमार्ग (हिदायत) पर होने का खुला सुबूत है।

وَإِنْ طَآئِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَأَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَإِنْۢ بَغَتْ إِحْدٰىهُمَا عَلَى الْأُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ إِلٰٓى أَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَإِنْ فَآءَتْ فَأَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوْا ۭ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ⑨

९. और अगर मुसलमानों के दो गुट आपस में लड़ पड़ें तो उन में मेल-मिलाप करा दिया करो ।[1] फिर अगर उन में से एक-दूसरे पर ज़ुल्म करे तो तुम (सब) उस गुट से जो ज़ुल्म करता है लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आये,[2] अगर लौट आये तो इंसाफ़ के साथ उन के बीच सुलह करा दो और इंसाफ़ करो । बेशक अल्लाह (तआला) इंसाफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है ।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوْا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ⑩

१०. (याद रखो) सभी मुसलमान भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाईयों में मिलाप करा दिया करो, और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर कृपा (रहम) की जाये ।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى أَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْأَلْقَابِ ۭ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْإِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ⑪

११. हे ईमानवालो ! मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक न करें, मुमकिन है कि यह उन से बेहतर हों[3] और न औरतें औरतों का मज़ाक करें, मुमकिन है कि ये उन से बेहतर हों, और आपस में एक-दूसरे पर आक्षेप (ऐब) न लगाओ और न किसी को बुरी उपाधि (लक़ब) दो । ईमान के बाद फ़िस्क़ (बुरा लफ़्ज़) बुरा नाम है,[4] और जो

---

[1] इस संधि (सुलह) का ढंग यह है कि उन्हें क़ुरआन और हदीस की तरफ़ बुलाया जाये यानी उन की रौशनी में उन के मतभेद (इख़्तिलाफ़) का हल किया जाये ।

[2] यानी अल्लाह और रसूल के हुक्म के मुताबिक़ अपना इख़्तिलाफ़ दूर करने को तैयार न हो और फ़साद की नीति अपनाये तो दूसरे मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि सब मिलकर फ़सादियों से लड़ाई करें यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म को मानने के लिए तैयार हो जाये ।

[3] एक इंसान दूसरे किसी इंसान का मज़ाक उस समय करता है जब वह अपने को उससे बेहतर और उसे हीन और गिरा समझता है, हालाँकि अल्लाह के सामने कौन कर्म और ईमान में बेहतर है और कौन नहीं, इस को सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है, इसलिए ख़ुद को अच्छा और दूसरों को गिरा समझने का कोई औचित्य (तुक) ही नहीं है, इस वजह से आयत में उससे रोका गया है ।

[4] यानी इस तरह नाम बिगाड़ कर, या बुरे नाम रखकर बुलाना, या इस्लाम लाने और तौबा कर लेने के बाद उसे पहले धर्म या पाप से मंसूब करके संबोधित (मुख़ातिब) करना, जैसे हे काफ़िर, हे व्याभिचारी (ज़ानी), हे शराबी आदि, बुरा काम है । हाँ, कुछ वह नाम जो ख़ास गुण (सिफ़त) के कारण हों, कुछ के क़रीब इस से अलग हैं जो किसी के लिए मशहूर हो जायें और वह इस पर अपने मन में दुखी न हों, जैसे लंगड़ा होने के कारण किसी का नाम लंगड़ा पड़ जाये, काला रंग होने के कारण कालिया या कालू मशहूर हो जाये आदि । (क़ुर्तबी)

माफ़ी न माँगे वही ज़ालिम लोग हैं।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱجْتَنِبُوا۟ كَثِيرًا مِّنَ ٱلظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ ٱلظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا۟ وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ⑫

१२. हे ईमानवालो! बहुत बदगुमानियों से बचो; यक़ीन करो कि कुछ बुरे गुमान पाप हैं,[1] और भेद (राज़) न टटोला करो[2] और न तुम में से कोई किसी की बुराई (पीठ पीछे चुगली) करे।[3] क्या तुम में से कोई भी अपने मरे भाई का गोश्त खाना अच्छा समझता है? तुम को उस से घृणा (नफ़रत) होगी[4] और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ी क़ुबूल करने वाला कृपालु (रहीम) है।

---

[1] ظَنّ (ज़न्न) का मतलब है गुमान करना। मतलब है कि परहेज़गारों और नेक लोगों के बारे में ऐसे गुमान रखना जो बेअसल हों और इल्ज़ाम और तुहमत के अंतर्गत (दायरे) आते हों, इसीलिए इसका अनुवाद बुरा गुमान किया जाता है और इसे हदीस में «أَكْذَبُ الْحَدِيثِ» (सब से बड़ा झूठ) कहकर इस से बचने पर बल दिया गया है।

[2] यानी (अर्थात) इस खोज में रहना कि कोई बुराई मिल जाय ताकि उसे बदनाम किया जाये, यह तजस्सुस है जिस से रोका गया है। हदीस में भी इस से रोका गया है, बल्कि कहा गया है कि अगर किसी की बुराई या ग़लती तुम्हारे इल्म (ज्ञान) में आ जाये तो उसे छिपाओ, न कि लोगों से चर्चा करते फिरो। आज के ज़माने में आज़ादी और स्वाधीनता की बहुत चर्चा है इस्लाम ने भी टटोलने से रोक कर इंसान की आज़ादी और स्वाधीनता को क़ुबूल किया है, लेकिन उस समय तक जब तक कि वह आम तौर से बेशर्मी का काम न करे या जब तक दूसरों के लिए दुख का कारण न बने। पश्चिम ने खुली स्वाधीनता की शिक्षा (नसीहत) देकर लोगों को साधारण (आम) बिगाड़ की इजाज़त दे दी है जिस से सामाजिक शान्ति का विनाश (बरबाद) हो गया है।

[3] غيبت (ग़ीबत) का मतलब है दूसरे लोगों के सामने किसी की बुराईयों और दोषों की चर्चा की जाये, जिसे वह बुरा समझे, अगर उस से ऐसी बातें जोड़ी जायें जो उस में हों ही नहीं तो वह आरोप (तुहमत) है, अपनी-अपनी जगह दोनों ही बहुत बड़ा गुनाह हैं।

[4] यानी किसी मुसलमान भाई की किसी के सामने बुराई करना ऐसे ही है जैसे मुर्दार भाई का गोश्त खाना। मुर्दा भाई का गोश्त खाना तो कोई पसन्द नहीं करता लेकिन ग़ीबत लोगों का बहुत पसंदीदा खाना है।

यَايُّهَا النَّاسُ

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿13﴾

१३. हे लोगो ! हम ने तुम्हें एक (ही) मर्द और औरत से पैदा किया है[1] और इसलिए कि तुम आपस में एक-दूसरे को पहचानो, जातियाँ और प्रजातियाँ बना दी हैं, अल्लाह की नजर में तुम सब में वह इज़्ज़त वाला है जो सब से ज़्यादा डरने वाला है ।[2] यक़ीन करो कि अल्लाह जानने वाला अच्छी तरह जानता है ।

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿14﴾

१४. ग्रामीण लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये। (आप) कह दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाये लेकिन तुम यों कहो कि हम इस्लाम लाये (विरोध छोड़कर फ़रमाँबरदार हो गये) हालाँकि अभी तक ईमान तुम्हारे दिल में दाख़िल ही नहीं हुआ,[3] तुम अगर अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करने लगोगे तो अल्लाह तुम्हारे अमलों में से कुछ भी कम न करेगा । बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला दयालु (रहीम) है ।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿15﴾

१५. ईमानवाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर (मज़बूत) ईमान लायें, फिर शंका-संदेह न करें और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्ध (जिहाद) करते रहें । (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे हैं ।

---

[1] यानी आदम और हव्वा (अलैहिमुस्सलाम) से । यानी तुम सब का मूल एक ही है, एक ही माँ-बाप की औलाद हो । मतलब यह है कि किसी के मात्र जाति और वंश के बिना पर कोई गर्व करने का हक़्दार नहीं, क्योंकि हर एक के नसब का सिलसिला हज़रत आदम ही से मिलता है ।

[2] यानी अल्लाह के सामने प्रधानता (फ़ज़ीलत) का माप परिवार, जाति और वंशक्रम नहीं, जो किसी इंसान के अधिकार (इख़्तियार) ही में नहीं है बल्कि यह माप तक़्वा (संयम) है, जिसे अपनाना इन्सान के इरादे और वश में है । यही आयत उन आलिमों की दलील है जो विवाह में जाति और वंश की बराबरी को ज़रूरी नहीं समझते और सिर्फ़ धर्म (दीन) के आधार पर विवाह को पसंद करते हैं । (इब्ने कसीर)

[3] कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) के ख़्याल से इन أعراب (आराब) से मुराद बनू असद और ख़ुज़ैमा के अवसरवादी (मुनाफ़िक़) हैं, जिन्होंने अकाल में सदक़ों (दानों) को पाने के लिए या क़त्ल और क़ैदी होने के डर से मुँह से इस्लाम क़ुबूल किया था । उन के दिल ईमान, सच्चे यक़ीन और साफ़ मन से ख़ाली थे । (फ़तहुल क़दीर)

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ⑯

१६. कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीनदारी से परिचित (आगाह) करा रहे हो? अल्लाह हर उस चीज़ को जो आकाशों में और धरती में है अच्छी तरह जानता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ۭ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⑰

१७. वे अपने मुसलमान होने का आप पर एहसान जताते हैं, (आप) कह दीजिए कि अपने मुसलमान होने का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ़ हिदायत की अगर तुम सच्चे हो।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑱

१८. यक़ीन करो कि आकाशों और धरती की छिपी हुई बातें अल्लाह अच्छी तरह जानता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

سُوْرَةُ قٓ

सूरतु क़ाफ़-५०

सूरः क़ाफ़* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पैंतालीस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

قٓ ۣ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ①

१. क़ाफ़! बहुत बड़ी शान (गरिमा) वाले इस क़ुरआन की क़सम है।

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَاۗءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ②

२. बल्कि उन्हें ताज्जुब हुआ कि उन के पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया तो काफ़िरों ने कहा कि यह एक अजीब चीज़ है।

* नबी ﷺ ईद की नमाज़ में सूरह क़ाफ़ और इक़तरबतिस्साअ: पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, बाबु मा युक़रअ बिहि फ़ी सलातिल ईदैन) हर जुमे के ख़ुतबे (भाषण) में भी पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमअ:, बाबु तख़फ़ीफ़िस्सलाते वल ख़ुत्बा) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों ईदों और जुमे में पढ़ने का मतलब यह है कि बड़े जनसमूहों में आप यह सूरह पढ़ा करते थे, क्योंकि इस में मख़लूक़ की इब्तेदा, दोबारा ज़िन्दगी, परलोक (आख़िरत), हिसाब, स्वर्ग-नरक, नेकी-अज़ाब, प्रोत्साहन (तरग़ीब) और तंबीह का बयान है।

ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ (3)

३. क्या जब हम मर कर मिट्टी हो जायेंगे। फिर यह वापसी दूर की बात है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِندَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ (4)

४. धरती जो कुछ उन में से घटाती है वह हमें मालूम है और हमारे पास सब याद रखने वाली किताब है।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيجٍ (5)

५. बल्कि उन्होंने सच बात को झूठ कहा, जबकि वह उन के पास पहुँच चुकी तो वे एक उलझन में पड़ गये हैं।[1]

أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِن فُرُوجٍ (6)

६. क्या उन्होंने आकाश को अपने ऊपर नहीं देखा कि हम ने उसे किस तरह बनाया है और उसे शोभा (ज़ीनत) दी है? उस में कोई दरार नहीं।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ (7)

७. और धरती को हम ने बिछा दिया है और उस पर हम ने पहाड़ डाल दिये हैं और उस में हम ने तरह-तरह की सुन्दर चीजें उगा दी हैं।[2]

تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ (8)

८. ताकि हर (अल्लाह की तरफ़) लौटने वाले बंदे के लिए देखने और समझने का ज़रिया हो।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ (9)

९. और हम ने आकाश से शुभ (मुबारक) पानी बरसाया और उस से बाग़ और कटने वाले खेत के अन्न पैदा किये।[3]

---

[1] हक़ (सच बात) से मतलब पाक क़ुरआन, इस्लाम या मोहम्मद ﷺ की नबूवत (दूतत्व) है। मायने सबका एक ही है। مَرِيجٍ (मरीज) का मतलब उलझाव, असमंजस्य (कशमकश) या शक है, यानी ऐसा विषय जो उन पर उलझ गया है, जिस से वे उलझाव में हैं कभी उसे जादूगर कहते हैं, कभी कवि (शायर) और कभी भविष्यवत्ता (नजूमी)।

[2] कुछ ने زوج (जौज) का मतलब जोड़ा लिया है, यानी सभी तरह की वनस्पतियाँ और चीजें जोड़ा-जोड़ा (नर-मादा) बनाया है। بَهِيجٍ (बहीज) का मायने अच्छा मंजर, हरी-भरी और ख़ूबसूरत।

[3] कटने वाले अन्न से मुराद वह खेतियाँ हैं जिन से गेहूँ, मकई, ज्वार, बाजरा, दालें और चावल आदि (वग़ैरह) उगाते हैं और फिर उनका भंडार कर लिया जाता है।

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ﴿10﴾

१०. और खजूरों के ऊँचे-ऊँचे पेड़ जिन के गुच्छे तह पर तह हैं।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿11﴾

११. बंदों की जीविका (रोज़ी) के लिए, और हम ने पानी से मृत नगर को ज़िन्दा कर दिया। इसी तरह (क़ब्रों से) निकलना है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ﴿12﴾

१२. उन से पहले नूह के समुदाय (क़ौम) ने और 'रस्स' वालों ने[1] और समूदियों ने झुठलाया था।

وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿13﴾

१३. और आद ने और फ़िरऔन ने और लूत के भाईयों ने।

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿14﴾

१४. और ऐका वालों[2] ने और तुब्बअ के समुदाय (क़ौम) ने[3] (भी झुठलाया था)। सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया तो मेरी सज़ा का वादा उन पर सच हो गया।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿15﴾

१५. क्या हम पहली वार पैदा करने से थक गये? बल्कि ये लोग नये जीवन की तरफ़ से शक में हैं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿16﴾

१६. हम ने इंसान को पैदा किया है और उस के दिल में जो विचार पैदा होते हैं हम उन्हें जानते हैं,[4] और हम उस के प्राणनाड़ी (शहरग) से भी

---

[1] रस्स के रहने वालों के निर्धारण के बारे में भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) में वड़ा इख़्तिलाफ़ है। इमाम इब्ने जरीर तवरी ने इस कथन को अधिमान (तरजीह) दिया है जिस में उन्हें अस्हाबे उखदूद (खाईयों वाले) कहा गया है, जिन की चर्चा सूरह बुरूज में है। (तफ़सील के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर और फ़तहुल क़दीर, सूर: अल-फ़ुरक़ान-३८)।

[2] أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ (अस्हाबुल ऐका) के लिए देखिये सुरतुश्शुअरा आयत १७६ का हाशिया।

[3] तुब्बअ जाति के लिए देखिये सूर: अद्दुख़ान आयत ३७ का हाशिया (तटलेख)।

[4] यानी इंसान जो कुछ छिपा रखता और मन में छिपा रखता है वह सब हम जानते हैं। वस्वसा दिल में आने वाले विचारों को कहा जाता है जिसका इल्म उस इंसान के सिवा किसी को नहीं होता, लेकिन अल्लाह इन विचारों को भी जानता है। इसीलिए हदीस कुदसी में आता है : "मेरे अनुगामियों (पैरोकारों) के दिल में आने वाले विचारों को अल्लाह ने माफ़ कर दिया है, यानी उन पर पकड़ नहीं करेगा जब तक उसे मुँह से ज़ाहिर न करे या उसके अनुसार अमल न

ज़्यादा उस के क़रीब हैं।

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿17﴾

१७. जिस समय दो लेने वाले जो लेते हैं, एक दायीं तरफ़ और दूसरा बायीं तरफ़ बैठा हुआ है।

مَا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿18﴾

१८. (इंसान) मुंह से कोई शब्द (लफ़्ज़) निकाल नहीं पाता लेकिन उस के क़रीब रक्षक (पहरेदार) तैयार है।

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ﴿19﴾

१९. और मौत की बेहोशी सत्य (हक़) लेकर आ पहुँची,[1] यही है जिस से तू कतराता फिरता था।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿20﴾

२०. और नरसिंघा (सूर) फूंक दिया जायेगा, यातना (अज़ाब) के वादे का दिन यही है।

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿21﴾

२१. और हर इंसान इस तरह आयेगा कि उस के साथ एक हाँक लाने वाला होगा और एक गवाही देने वाला।

لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿22﴾

२२. बेशक तू इस से असावधान (ग़ाफ़िल) था, लेकिन हम ने तेरे सामने से पर्दा हटा दिया तो आज तेरी नज़र बहुत तेज़ है।

وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿23﴾

२३. उस के साथ रहने वाले (फ़रिश्ते) कहेंगे यह हाज़िर है जो कि मेरे पास था।[2]

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿24﴾

२४. दोनों डाल दो नरक में हर काफ़िर उद्दण्ड (सरकश) को।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿25﴾

२५. जो नेक काम से रोकने वाला, सीमा (हद)

करो।" (अल-बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाबु इज़ा हनस नासियन फ़िल ऐमान, मुस्लिम बाबु तजावुज़िल्लाहे अन हदीसिन नफ़्से वल ख़्वातिरे बिल क़ल्बे इज़ा लम तस्तक़िर्र)

[1] इसका दूसरा मायने 'मौत की कठिनाई सत्य (हक़) के साथ आयेगी' है यानी मौत के समय सच ज़ाहिर और उन वादों की सच्चाई स्पष्ट (वाज़ेह) हो जाती है जो क़यामत (प्रलय) और स्वर्ग और नरक के बारे में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम करते रहे हैं।

[2] यानी फ़रिश्ता इंसान का पूरा रिकार्ड सामने रख देगा कि यह तेरा कर्मपत्र (आमालनामा) है जो कि मेरे पास था।

तोड़ने वाला और शक करने वाला था।

२६. जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद (देवता) बना लिया था, तो उसे कठोर अज़ाब में डाल दो।

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿26﴾

२७. उसका साथी (शैतान) कहेगा कि हे हमारे रब! मैंने इसे रास्ते से भटकाया नहीं था, बल्कि यह ख़ुद ही दूर के भटकावे में था।

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿27﴾

२८. (अल्लाह तआला) कहेगा कि बस मेरे सामने झगड़े की बात न करो, मैं तो पहले ही तुम्हारी तरफ़ अज़ाब का वादा भेज चुका था।

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ﴿28﴾

२९. मेरे पास बात बदलती नहीं और न मैं अपने भक्तों (बन्दों) पर तनिक भी ज़ुल्म करने वाला हूँ।

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿29﴾

३०. जिस दिन हम नरक से पूछेंगे कि क्या तू भर चुकी? वह जवाब देगी कि क्या कुछ और ज़्यादा भी है?

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿30﴾

३१. और जन्नत सदाचारियों (परहेज़गारों) के लिए बिल्कुल क़रीब कर दी जायेगी, तनिक भी दूर न होगी।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿31﴾

३२. यह है जिसका वादा तुम से किया जाता था हर उस इंसान के लिए जो ध्यानमग्न और पाबन्दी करने वाला हो।[1]

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿32﴾

३३. जो दयालु (रहमान) का छिपे तौर से डर रखता हो और आकर्षित (मुतवज्जिह) होने वाला दिल लाया हो।

مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿33﴾

३४. तुम इस जन्नत में शान्ति (सलामती) के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿34﴾

[1] यानी जब ईमान वाले जन्नत और उसकी सुख-सुविधाओं (ऐशो आराम) को क़रीब से देखेंगे तो कहा जायेगा कि यही वह स्वर्ग है जिसका वादा हर अल्लाह में ध्यानमग्न और उसकी आज्ञापालन (इताअत) करने वाले से किया गया था।

है।

३५. ये वहाँ जो कुछ चाहें उन्हें मिलेगा (बल्कि) हमारे पास और भी ज़्यादा है।[1]

لَهُمْ مَّا يَشَآءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿35﴾

३६. और उन से पहले भी हम बहुत से समुदायों को बरबाद कर चुके हैं, जो उन से ताक़त में बहुत ज़्यादा थे, वे नगरों में फिरते ही रह गये कि कोई भागने का ठिकाना है?

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ﴿36﴾

३७. इस में हर उस इंसान के लिये नसीहत है जिस के दिल हो या कान धरे और वह हाज़िर हो।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿37﴾

३८. बेशक हम ने आकाशों और धरती और दोनों के बीच की जो कुछ चीज़ें हैं, सब को (सिर्फ़) छः दिन में पैदा कर दिया और हमें थकान ने स्पर्श (छुआ) तक नहीं किया।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ﴿38﴾

३९. इसलिए आप उन बातों पर सब्र करें और अपने रब का पवित्रतागान (तस्बीह) तारीफ़ के साथ सूरज निकलने से पहले भी और डूबने से पहले भी करें।

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿39﴾

४०. और रात के किसी समय भी महिमागान (तस्बीह) करें और नमाज़ के बाद भी।[2]

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿40﴾

---

[1] इस से अभिप्राय (मुराद) अल्लाह का दर्शन (ज़ियारत) है जो जन्नत वालों को मिलेगा, जैसा कि (لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ) (यूनुस-२६) की तफ़सीर (व्याख्या) में गुज़रा।

[2] यानी अल्लाह की तस्बीह करें। कुछ ने इस से वह तस्बीहें मुराद ली हैं, जिन के पढ़ने पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के बाद नबी ﷺ ने ज़ोर दिया है जैसे سُبْحَانَ الله (सुब्हानल्लाहे) ३३ बार, اَلْحَمْدُ لله (अल्हम्दो लिल्लाहे) ३३ बार, الله أكبر (अल्लाहो अकबर) ३४ बार आदि। (अल-बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाबुज़ ज़िक्रे बादस सलाति, मुस्लिम बाबु इस्तिहबाबिज़्ज़िक्रे, बादस सलाति व बयानु सिफ़तिही) कुछ ने कहा है कि أدبار السجود से मुराद मग़रिब की नमाज़ के बाद की दो रकअतें हैं, कुछ ने कहा कि उपर बयान की गई तस्बीहें आयत के उतरने के बहुत समय बाद बताई गई थीं।

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿41﴾

४१. और सुन रखें कि जिस दिन एक पुकारने[1] वाला क़रीब ही की जगह से पुकारेगा ।[2]

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿42﴾

४२. जिस दिन उस कड़ी आवाज़ को यक़ीन के साथ सुनेंगे, यही निकलने का दिन होगा ।[3]

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿43﴾

४३. हम ही ज़िन्दा करते और मारते हैं और हमारी तरफ़ ही फिर कर आना है ।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿44﴾

४४. जिस दिन धरती फट पड़ेगी और यह दौड़ते हुए (निकल पड़ेंगे), यह जमा कर लेना हम पर बहुत ही आसान है ।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ﴿45﴾

४५. हम अच्छी तरह जानते हैं जो कुछ यह कह रहे हैं और आप उन्हें बलपूर्वक (ताक़त के ज़ोर पर) मनवाने वाले नहीं, बस आप उन्हें क़ुरआन के द्वारा समझाते रहें जो मेरी धमकी से डरते हों ।[4]

---

[1] यह पुकारने वाला इस्राफ़ील फ़रिश्ता होगा या जिब्रील और यह वह पुकार होगी जिस से लोग मैदाने महशर में जमा हो जायेंगे, यानी दूसरी फूँक ।

[2] इस से कुछ ने बैतुल मोक़द्दस के क़रीब का सख़र: (चट्टान) मुराद लिया है । कहते हैं कि यह आकाश से बहुत क़रीब की जगह है । कुछ के क़रीब इसका मतलब यह है कि हर इंसान यह आवाज़ इस तरह सुनेगा जैसे उस के क़रीब ही से आवाज़ आ रही है । (फ़तहुल क़दीर) और यही सही लगता है ।

[3] यह चीख़ यानी यह क़यामत की फूँक ज़रूर होगी, जिस में वह दुनिया में शक करते थे, और यही दिन क़ब्रों से निकलने का दिन होगा ।

[4] यानी आप की दावत और सदुपदेश (नसीहत) से वही नसीहत हासिल करेगा जो अल्लाह और उसकी धमकियों से डरता और उस के वादे पर यक़ीन रखता होगा, इसीलिए हज़रत क़तादा यह दुआ किया करते थे ।

«اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ يَخَافُ وَعِيدَكَ وَيَرْجُو مَوْعُودَكَ، يَا بَارُّ! يَا رَحِيمُ!»

"हे अल्लाह हमें उनमें से कर जो तेरी धमकियों से डरते और तेरे वादों से उम्मीद रखते हैं । हे एहसान करने वाले, हे रहम करने वाले ।" (इब्ने कसीर)

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ

सूरतुज़ ज़ारियात-५१

सूरः ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई और इस में साठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿1﴾

१. क़सम है उड़ाकर बिखेरने वालियों की,

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿2﴾

२. फिर बोझ उठाने वालियों की,

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿3﴾

३. फिर धीमी चाल से चलने वालियों की,[1]

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ﴿4﴾

४. फिर काम का बटवारा करने वालियों की।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿5﴾

५. यक़ीन करो कि तुम से जो वचन (वादे) दिये जाते हैं (सब) सच हैं।

وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿6﴾

६. और बेशक इंसाफ़ होने वाला है।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿7﴾

७. क़सम है रास्तों वाले आकाश की।[2]

اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿8﴾

८. निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से तुम मुख़्तलिफ़ बातों में पड़े हुए हो।

يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ﴿9﴾

९. उस से वही फेरा (रोका) जाता है जो फेर दिया गया हो।

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿10﴾

१०. निर्मूल (अटकल) बातें करने वाले नाश कर दिये गये।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿11﴾

११. जो अचेत (ग़ाफ़िल) हैं और भूले हुए हैं।

يَسْئَلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿12﴾

१२. पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा?

---

[1] جاريات (जारियात) पानी में चलने वाली नवकायें, يُسْرًا (युस्रन) आसानी से सरलता से।

[2] दूसरा अनुवाद (तर्जुमा) ख़ूबसूरत और मुज़य्यन किया गया है, चांद, सूरज, नक्षत्र और जगमगाते तारे उसकी ऊँचाई और फैलाव, यह सब आसमान की ज़ीनत और ख़ूबसूरती की वजह हैं।

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ (13)

१३. (हाँ) यह वह दिन है कि ये आग पर तपाये जायेंगे।

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ ۖ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ (14)

१४. मज़ा चखो, यही है जिस की तुम जल्दी मचा रहे थे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (15)

१५. बेशक अल्लाह से डर रखने वाले स्वर्गों और (शीतल) जल स्रोतों (चश्मों) में होंगे।

آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ (16)

१६. उन के रब ने जो कुछ उन को दिया है उसे ले रहे होंगे, वे तो उस से पहले ही नेकी करने वाले थे।

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ (17)

१७. वे रात को बहुत कम सोया करते थे।

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ (18)

१८. और वे रात के आख़िरी पहर (भोर) में इस्तिग़फ़ार किया करते थे।[1]

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ (19)

१९. और उनके माल में माँगने वालों का और सवाल करने से बचने वालों का हक़ था।[2]

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ (20)

२०. और यक़ीन करने वालों के लिए तो धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ (21)

२१. और ख़ुद तुम्हारे अस्तित्व (वजूद) में भी, तो क्या तुम नहीं देखते हो।

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ (22)

२२. और तुम्हारी जीविका (रिज़्क़) और जो तुम

---

[1] भोर का समय दुआ के क़ुबूल होने का बहुत अच्छा वक़्त है। हदीस में आता है कि जब रात का तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो अल्लाह दुनिया के आकाश पर उतर आता है और आवाज़ देता है कि कोई तौबा करने वाला है कि उसकी तौबा क़ुबूल करूँ, कोई माफ़ी माँगने वाला है कि मैं उसे माफ़ करूँ, कोई भिखारी है कि मैं उसकी माँग पूरी कर दूँ, यहाँ तक कि फ़ज्र (प्रभात) हो जाती है। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफिरीन बाबुत तरग़ीबे फ़िद दुआये वज़ ज़िक्रे फ़ी आख़िरिल लैले वल एजाबति फ़ीहि)

[2] محروم (महरूम) से मुराद वह है जो ज़रूरत होने पर भी नहीं माँगता, तो उस के लायक़ होते हुए भी उसे लोग नहीं देते, या वह इंसान है जिसका सब कुछ आकाश और धरती की आपदा (आफ़त) की वजह से नाश हो जाये।

को वादा दिया जाता है सब आकाश में है।

२३. तो आकाश और धरती के रब की क़सम! यह बिल्कुल सच है ऐसा ही जैसे कि तुम बातें करते हो।

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ﴿23﴾

२४. क्या तुझे इब्राहीम (ﷺ) के सम्मानित मेहमानों की ख़बर भी पहुँची है?

هَلْ أَتَىٰكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ ٱلْمُكْرَمِينَ ﴿24﴾

२५. वे जब उनके यहाँ आये तो सलाम किया, (इब्राहीम) ने सलाम का जवाब दिया (और कहा ये तो) अंजान लोग हैं।

إِذْ دَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَقَالُوا۟ سَلَٰمًا ۖ قَالَ سَلَٰمٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿25﴾

२६. फिर (चुपचाप जल्दी-जल्दी) अपने परिवार वालों की तरफ़ गये और एक मोटे बछड़े का (गोश्त) लाये।

فَرَاغَ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿26﴾

२७. और उसे उनके पास रखा और कहा आप खाते क्यों नहीं?

فَقَرَّبَهُۥٓ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿27﴾

२८. फिर दिल ही दिल में उन से डर गये[1] उन्होंने कहा कि आप डरे नहीं[2] और उन्होंने (हजरत) इब्राहीम को एक ज्ञानी (आलिम) पुत्र के होने की ख़ुशख़बरी दी।

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا۟ لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿28﴾

२९. तो उनकी पत्नी ने तअज्जुब में आकर[3] अपने मुँह पर हाथ मार कर कहा कि मैं तो बुढ़िया हूँ, साथ ही बाँझ।

فَأَقْبَلَتِ ٱمْرَأَتُهُۥ فِى صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿29﴾

३०. उन्होंने कहा कि हाँ तेरे रब ने इसी तरह कहा है, बेशक वह हिक्मत वाला और जानने वाला है।[4]

قَالُوا۟ كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْحَكِيمُ ٱلْعَلِيمُ ﴿30﴾

---

[1] डर का एहसास इसलिए किया कि हज़रत इब्राहीम ने सोचा कि यह आने वाले किसी अच्छे विचार (इरादे) से नहीं आये हैं बल्कि बुरे इरादे से आये हैं।

[2]- हज़रत इब्राहीम ﷺ के मुँह पर डर के चिन्ह देखकर फ़रिश्तों ने कहा।

[3] صَرَّةٌ (सर्रतिन) का दूसरा मायने है चीख़ और पुकार यानी चीख़ते हुए कहा।

[4] यानी जैसे हम ने तुझ से कहा है, यह हम ने अपनी तरफ़ से नहीं कहा है बल्कि तेरे रब ने इसी तरह कहा है, जिस से हम तुझे ख़बर कर रहे हैं, इसलिए इस में न आश्चर्य (ताज्जुब) की जरूरत है न शक की, क्योंकि जो अल्लाह चाहता है ज़रूर होकर रहता है।